कहानी सुनाना

परिचय

इस लेख में, हम बचपन के शुरुआती वर्षों में कहानी सुनने और सुनाने के महत्व को समझेंगे। लेकिन, कहानी सुनाना क्यों महत्वपूर्ण है, इस पर विचार करने से पहले, हमें यह समझना होगा कि कहानियाँ वास्तव में क्या होती हैं। कहानियाँ घटनाओं का एक क्रम है जो विचारों और अनुभवों को व्यक्त करती हैं और बच्चों को अर्थ समझने में मदद करती हैं। कहानियों के माध्यम से कहानीकार अपने अनुभवों, विचारों, रचनात्मकता और विश्वासों के लिए द्वार खोलते हैं, बच्चों को दुनिया की साझा समझ में आमंत्रित करके उनके साथ संबंध बनाते हैं। कुछ कहानियाँ वास्तविक जीवन की घटनाओं पर आधारित होती हैं और कुछ कहानियाँ काल्पनिक हो सकती हैं। बच्चों के लिए, कहानियाँ संचार का एक तरीका है जिसमें शब्दों के साथ-साथ चित्र, ध्वनियाँ, हरकतें और अन्य सभी इंद्रियाँ भी शामिल होती हैं।

कहानी सुनाने का महत्व

बचपन के शुरुआती वर्षों के दौरान कहानी सुनाना बच्चों के भाषा कौशल, संज्ञानात्मक कौशल, भावनात्मक और रचनात्मक विकास को प्रोत्साहित करने में मदद करता है। यह कहानीकार और बच्चों के बीच सकारात्मक भावनात्मक जुड़ाव बनाने में भी एक प्रभावी उपकरण है। भाषा के विकास में कहानी सुनाने की भूमिका तब से शुरू होती है जब बच्चा अपनी माँ के गर्भ में होता है।

अध्ययनों से पता चला है कि गर्भावस्था के दौरान बार-बार सुनाई जाने वाली कहानियां बच्चों के **सुनने की क्षमता (श्रवण पथ) को विकसित करने में मदद करती हैं, जिससे उन्हें विभिन्न ध्वनियों और परिचित आवाजों के बीच अंतर करने में मदद मिलती है,** जो जन्म के बाद प्रारंभिक साक्षरता और संचार कौशल का आधार बनता है।[1]बचपन से ही कहानियाँ सुनाना बच्चों में समझ, संज्ञानात्मक कौशल और **शब्दावली निर्माण** विकसित करने में मदद करता है। बच्चे प्रतिदिन की दैनिक बातचीत की अपेक्षा कहानियों के माध्यम से अधिक शब्दावलियों से परिचित होते हैं। बच्चों की बोली जाने वाली भाषा में कहानियाँ, खास तौर पर उनकी मातृभाषा में ;उनके सुनने के कौशल और ध्यान को विकसित करने में मदद करती हैं। कहानियाँ **वाक्य निर्माण और व्याकरण** को समझने में सहायक होती हैं, जो बाद के वर्षों में समझ और पढ़ने के कौशल के लिए महत्वपूर्ण है। जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते हैं, वे अपनी कहानियाँ सुनाने में सक्षम होते जाते हैं। किताबों से सुनाई गई कहानियाँ **प्रिंट जागरूकता और शुरुआती पढ़ने के कौशल** को विकसित करने में मदद करती हैं, और **किताबों के साथ जुड़ाव** को बढ़ावा देती हैं। बच्चों को कम उम्र में उम्र के हिसाब से उपयुक्त कहानी की किताबें पढ़ने से उन्हें अक्षरों, शब्दों और पृष्ठ पर पाठ की संरचना और गति से परिचित होने में मदद मिलती है। बचपन में कहानी सुनाने से बच्चे को **संज्ञानात्मक कौशल जैसे याद रख पाना ,क्रम से घटनाओं को बता पाना , कारण और प्रभाव को समझना तथा अपने शब्दों में कहानी की संरचना** को तैयार करने में सहायता मिलती है।

[1] DeCasper, A. J., & Spence, M. J. (1986). Prenatal maternal speech influences newborns' perception of speech sounds. *Infant Behavior & Development, 9*(2), 133–150

कहानियाँ बच्चों में **करुणा और समानुभूति सहित भावनात्मक प्रतिक्रियाओं** को बढ़ावा देती हैं। एक अच्छी तरह से सुनाई गई कहानी ;बच्चों को बताई जा रही घटनाओं , पात्रों, उनके व्यवहार और कार्यों की कल्पना करने में और स्वयं को उसमें स्थापित करने में सक्षम बनाती है, साथ ही उन्हें अपने स्वयं के सामाजिक और सांस्कृतिक वातावरण के साथ संबंध बनाने में सहयोग करती है। कहानियों में वर्णित अपरिचित घटनाएँ और पात्र बच्चों की **कल्पनाशीलता और रचनात्मक सोच और अभिव्यक्ति की उनकी क्षमताओं** को बढ़ाने में मदद करते हैं। बच्चों के अपने व्यक्तित्व और अनुभव कहानी के प्रति उनकी प्रतिक्रिया को निर्धारित करते हैं। इसलिए, उन्हें पात्रों और घटनाओं को अपने तरीके से कल्पना करने की अनुमति देना उन्हें कहानी के बारे में अपने अनूठे तरीके से बात करने के लिए प्रेरित करता है। इससे बच्चों के लिए नई शब्दावली सीखने और उसका प्रयोग करने, तथा मौखिक या बिना बोले (चित्रकारी) जैसे संचार के माध्यमों से अपने विचारों को अभिव्यक्त करने के अवसर मिलते हैं ।

कहानी कहने के तरीके

बोलकर : कहानी कहने का सबसे पुराना और पारंपरिक तरीका कहानी को बोल कर कहना है, जिसमें कथावाचक कहानी को जीवंत और मनोरंजक बनाने के लिए आवाज के स्वर, चेहरे के भाव को कहानी की शुरुआत, मध्य और अंत तक उपयोग करता है। *इसके लिए कथावाचक के पास अच्छा बोलने का कौशल होना चाहिए, ताकि बच्चों में रचनात्मक रूचि पैदा हो सके, जिससे वे खुद को घटनाओं से जोड़ सकें, पात्रों की कल्पना कर सकें और कहानी की भावनात्मक बारीकियों को समझ सकें और उसके अनुसार अपनी प्रतिक्रिया दे सकें। शैशव अवस्था में, सुनाई गई कहानियाँ केवल 2-3 वाक्यों की हो सकती हैं।*

अभिनय या भूमिका निभाना(रोल प्ले) : कठपुतलियों, मुखौटों या प्रॉप्स का उपयोग करके कहानियों का नाटकीयकरण करना बच्चों को कहानी की कल्पना करने की अनुमति देता है और उसे अधिक रोचक बनाता है। अभिनय के दौरान, कहानीकार कहानियों में सांस्कृतिक संदर्भ जोड़ने में सक्षम होता है जो कहानियों को बच्चों के लिए अधिक प्रासंगिक बनाता है। कहानी के नाटकीयकरण में बच्चों को शामिल करने व बच्चों को हाव-भाव और शारीरिक क्रियाओं के माध्यम से अपने आस-पास के वातावरण की अवधारणा को व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करने से कहानी में प्रामाणिकता आती है।

कहानी की किताब से कहानी पढ़ना: चित्र युक्त कहानी की किताबें कहानी की घटनाओं की अधिक स्पष्ट तस्वीर प्रदान करती हैं। चित्रों में दर्शाए गए रंगों और आकृतियों की श्रृंखला बच्चों के मन में संज्ञानात्मक, रचनात्मक और भावनात्मक उत्तेजना को बढाती है। कहानी की किताब पढ़ने के दौरान शब्दावली विकास को विशेष रूप से प्रोत्साहित किया जाता है, क्योंकि बच्चे कई नए शब्दों से परिचित होते हैं। बच्चे किताबों से और पाठ से सम्बंधित बोले गए शब्दों से परिचित होने लगते हैं ।

केवल चित्र वाली पुस्तकों का उपयोग करके कहानियाँ बनाना: केवल चित्र वाली पुस्तकें शब्द रहित वे संकेत हैं, जो बच्चों को कहानीकार की भूमिका निभाने का अवसर देती हैं। केवल चित्र वाली कहानियाँ कोई शिक्षा या कुछ सिखाने का प्रयास नहीं करती हैं बल्कि वे बच्चों के मनोरंजन के लिए होती हैं।[2]

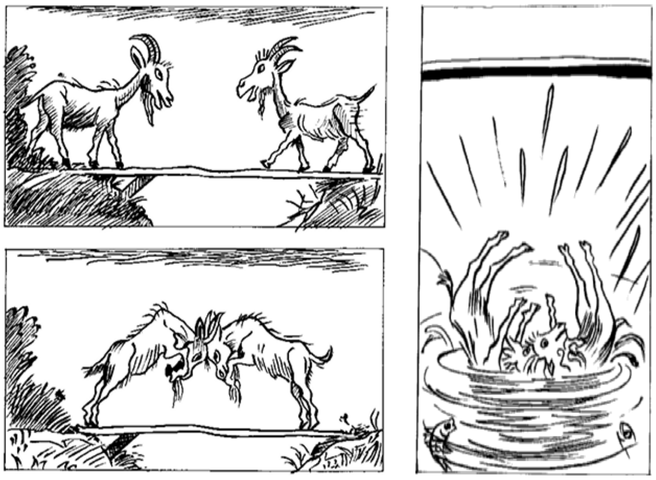

आंगनवाड़ी केंद्र में कहानी सुनाने की गतिविधियों में आंगनवाड़ी कार्यकत्री की भूमिका

- *दैनिक दिनचर्या में कहानी सुनाने के चक्र को न छोड़ें !!*
- आंगनवाड़ी केंद्र में बच्चों को ध्यानपूर्वक सुनने तथा अपने विचार और धारणाएं व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु एक सहायक वातावरण बनाएं।
- पहले से तैयारी करें - कहानी का चयन, कहानी कहने का तरीका (कथन, कहानी की किताब, चित्र पुस्तकें या प्रॉप्स का उपयोग), कहानी की अवधि (5-6 मिनट से अधिक नहीं होनी चाहिए)।
- कहानी सुनाते समय , चयनित कहानी की अवधारणाओं और विचारों को सुदृढ़ करने के लिए पहले से तैयार रहें।

कहानियाँ मज़ेदार होनी चाहिए!!

कहानी सुनाते समय ध्यानपूर्वक अभ्यास करें

- **प्रत्येक कहानी के अंत में "नैतिकता" बताने से बचें –** बच्चों को स्वयं कहानियों से निष्कर्ष निकालने या नैतिकता और मूल्यों को निर्धारित करने दें। बच्चों के बीच आलोचनात्मक सोच को प्रोत्साहित करने और उन्हें सही और गलत के बीच अंतर करने की क्षमता को विकसित करने के लिए चर्चाओं को उनके लिए सुविधाजनक बनाएँ। उदाहरण के लिए, कछुए और खरगोश की क्लासिक कहानी में, कहानी को इस तरह से समाप्त न करें कि " इस कहानी से हमें ये शिक्षा मिलती है कि अच्छे परिणाम व्यवस्थित और लगातार प्रभावी प्रयासों से प्राप्त किये जा सकते हैं ।"
- **बच्चों को कहानी को ठीक उसी तरह याद करने के लिए विवश न करें, जैसी वह सुनाई गई है –** बच्चों को अपने विचारों और सोच के आधार पर कहानी में बदलाव करने दें। कहानियों को शब्दशः याद करना और फिर उसे बिल्कुल वैसे ही सुनाना, बच्चों के लिए कहानी को पहले से ही अनुमान लगाने वाला और कम मनोरंजक बनाता है । उदाहरण के लिए, सबसे अधिक पढ़ी और सुनाई जाने वाली कहानियों में से एक टोपी वाला और बंदर , बच्चों को ऐसी

[2] Radlov, N (2004). Picture Stories (A, Deshpande, Illus.). Kaja Kaja Maru. (Original work published in 1960)

कहानी की घटनाओं को शब्दशः बताने के लिए मजबूर न करें जैसा कि आम तौर पर किया जाता है। बच्चों को घटनाओं के क्रम में अपनी रचनात्मकता जोड़ने दें।

- **अच्छी कहानियाँ या बच्चों को पसंद आने वाली कहानियाँ दोहराएँ –** अच्छी कहानियाँ या बच्चों की पसंदीदा कहानियाँ दोहराने से बच्चों में उन अवधारणाओं को मजबूत करने में मदद मिलती है जो कहानियों के माध्यम से विकसित की जानी हैं और जिसके लिए बच्चों का ध्यान केन्द्रित करना और रुचि बनाए रखना आवश्यक होता है। अगर आंगनवाड़ी केंद्र में बच्चे अपनी पसंद की कहानी दोहराने की माँग करते हैं, तो उनके अनुरोध को अस्वीकार न करें।
- ***कहानी सुनाते समय बच्चों को अपने अनुभव या विचार साझा करने दें*** *– बच्चों को बताई गई घटनाओं और पात्रों तथा उनके अपने अनुभवों के बीच संबंध बनाने की स्वतंत्रता देने से उनके संचार कौशल में सुधार होता है, और यह उनके संज्ञानात्मक विकास और उससे जुड़ी भावनात्मक विकास की प्रतिक्रिया को दर्शाता है। बच्चों से सवाल पूछें जैसे "आपको क्या लगता है कि उसके बाद क्या हुआ, आप उसकी जगह पर क्या करेंगे"।*
- **बच्चे के लिए सांस्कृतिक और सामाजिक महत्व वाली कहानियाँ –** ऐसी कहानियाँ चुनने का प्रयास करें जिनका बच्चे के लिए सांस्कृतिक और सामाजिक महत्व हो ताकि वह बोल सके और अपने अनुभव साझा कर सके।
- **स्थानीय भाषा और औपचारिक भाषा वाले क्षेत्रों में द्विभाषी शब्दावली का उपयोग करें:** दोनों तरह की शब्दावली का उपयोग करने से बच्चे को अपनी क्षेत्रीय/घरेलू भाषा के साथ-साथ स्कूली शिक्षा के बाद के वर्षों में औपचारिक रूप से उपयोग की जाने वाली भाषा के शब्दों से भी परिचित होने में मदद मिलती है। घर की भाषा में संवाद करना सीखना बच्चे को उसके समुदाय, संस्कृति और विरासत से जुड़ने में मदद करता है। उत्तर प्रदेश के कुछ क्षेत्रों में जहाँ अवधी घरेलू भाषा है और हिंदी औपचारिक भाषा है, वहाँ पहले कहानी अवधी में सुनाई जा सकती है और दूसरे दिन उसे हिंदी भाषा में दोहराया जा सकता है। ऐसे मामलों में, वर्णन करते समय चित्रों का उपयोग करना सहायक होता है, इससे बच्चों को शब्दों को प्रतीक के साथ जोड़ने और घरेलू भाषा से औपचारिक भाषा की और गमन करने में मदद मिलेगी। उदाहरण के लिए,

अवधी

"एक बिलईया रहै। तौ ऊ यहर वहर घूमा करत रहै।"

हिन्दी

"एक बिल्ली थी जो पूरे दिन केवल इधर-उधर घूमा करती थी।"